प्रस्तावना

पर्यावरण के मुद्दों को भारतीय मीडिया किस तरह कवर कर रहा है यह प्रश्न रह-रहकर उठता है। प्राकृतिक आपदाओं के आलवा सामान्य दिनों में भारतीय मीडिया में पर्यावरण के सवाल बहुत मुखरता से नहीं दिखते। जिसका भुगतान अन्य आपदा के रूप में चुकाना पड़ता है। आज मानव अपने पर्यावरण से कटता जा रहा है।

वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कहना है कि लोगों को प्रकृति से जोड़ना कुछ और नहीं बल्कि लोगों को खुद से जोड़ना है और भारत एक ऐसा देश है जहां लोग संस्कृति रूपी धरोहर से परिपूर्ण हैं तथा आज भी अपनी संस्कृति से जुड़े हुए हैं। भारतीय धरती को माँ मानते हैं नदियों और समुद्रों की पूजा करते हैं, पवन को पूजते हैं, पेड़-पौधों को पूजते हैं। भारतीय संस्कृति में रचे-बसे सभी धर्मों का संदेश प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा का है। मानव अपने विकास क्रम में उन सभी संसाधनों का उपयोग करता है जो वातावरण का अभिन्न अंग है। वातावरण में मौजूद संसाधनों के प्रयोग से वातावरण ही प्रभावित होता है। संसाधनों का उपयोग हम किस रूप में करते हैं कितना करते हैं और कहाँ-कहाँ करते हैं ,ये सभी प्रश्न संसाधनों के शोषण से जुड़े हुए हैं। ऐसे सभी क्रियाकलाप एवं उनका प्रभाव मूल रूप से वातावरण से जुड़े हैं, जिनका प्रभाव कई तरह से होता है। इन तथ्यों का जवाब संसाधन व्यवस्था से भली प्रकार से समझा जा सकता है कि हम इनका उपयोग किस हद तक कैसे-कैसे करते हैं। पर्यावरण प्रबंध के अंतर्गत संसाधन का उपयोग एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। इनका उपयोग कैसे, कितना और कब करें एवं किस प्रकार न्यूनतम संसाधन उपयोग द्वारा अधिकतम लाभ मिले एवं संसाधनों का जीवन काल बढ़ता रहा।

जलपुरुष राजेंद्र प्रसाद के शब्दों में कहें तो विज्ञान और प्रौद्योगिकी की कोख से जिस नयी भोगवादी सभ्यता का जन्म हुआ है, उसने जीवन और प्रकृति के प्रति मानव दृष्टिकोण में एक बुनियादी परिवर्तन कर दिया है। प्रकृति के साथ व्यवहार करने का हमारा समाज से जो रिश्ता था, वह बिल्कुल बदल गया है। अब प्रकृति मानव समाज के लिए मात्र संसाधन बन कर रह गयी है, और मानव उस संसाधन का स्वामी बन गया है। निःसंदेह, आज के वैज्ञानिक युग में भौतिक समृद्धि हुई है, परंतु जितना औद्योगीकरण हुआ है, उससे कहीं अधिक मात्रा में जल और वायु प्रदूषण भी हुआ है। प्रदूषण आज की विकट मानवीय

समस्या बन गयी है, जिसने सम्पूर्ण मानवजाति के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। आज हम जिस तकनीकी-मण्डल (टेक्नोस्फीयर) में सांस ले रहे हैं, उसमें कितने दिन जीवित रह सकेंगे, कुछ कहा नहीं जा सकता।

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा महाराष्ट्र के कुलपति महोदय गिरीश्वर मिश्र का मानना है कि हम जो वायु, अन्न, जल और विचार अपने परिवेश से पाते हैं और जो आचरण करते हैं उसी से जीवन निर्मित होता है। जब इन स्त्रोतों की कमी होने लगती है तब जीवन शक्ति क्षीण होने लगती है। लोभ के वश में आकर हम यह भूल जाते हैं कि पूरी सृष्टि ही एक प्राणी की तरह है और उसका भी जीवन है जिसमें सबका जीवन समाया हुआ है। जिस अबाध गति से किस्म-किस्म का कूड़ा कचरा हम पैदा कर रहें हैं और प्रदूषण फैला रहें हैं, उससे यह धरती रहने योग्य नहीं बचेगी। इस समस्या के समाधान के लिए हमें अपने अतीत और वर्तमान तथा पूर्व और पश्चिम के बीच सामंजस्य स्थापित करना होगा।

जहां पर्यावरण पर इतनी विपदाएँ हैं तो वहीं बुंदेलखंड में आशा की किरण भी दिखती है। लोकमत समाचार में विश्व पर्यावरण दिवस पर छपे एक आलेख में बुंदेलखंडजल प्रबंधन का विस्मय तरीके का ज़िक्र किया गया। बुंदेलखंड में महिलाओं ने जल सहेली बनकर कई गांवों की तस्वीर बदली है। महिलाओं ने अपने श्रम से पुराने जलस्त्रोतों को पुनर्जीवित किया है, वहीं बर्बाद होते पानी को उपयोगी बनाया है, यह जल सहेलियाँ केंद्र सरकार के ग्रामीण स्तर पर जल संरक्षण के लिए शुरू किए गए जल क्रांति अभियान में मदद के लिए बनाई गयी हैं। बुंदेलखंड के हमीरपुर जिले के गोहनी गाँव का तालाब अब साफ-सुथरा नज़र आता है। आज से पाँच वर्ष पूर्व इस गाँव का तालाब बहुत गंदा था, परंतु आज स्थिति एकदम विपरीत है। झारखंड में भी महिलाओं ने जल संरक्षण में अद्भुत भूमिका निभाई है। पंचायत खिजरी के नया टोला की आरती देवी गाँव में जल प्रबंधन का काम देखती हैं। आरती देवी गाँव में लोगों को पानी का बिल भी थमाती हैं और शुल्क वसूली भी करती हैं। झारखंड देश का पहला और एकमात्र राज्य है, जहां राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन की सहिया के तर्ज पर पेयजल एवं स्वच्छता विभाग ने राज्य में जल सहिया बनाने की प्रक्रिया शुरू की गयी है। राज्य में 32 हज़ार जल सहिया चुनी गयी है।

भारत में ऐसे कई पर्यावरणविद् हुए हैं जो निरंतर पर्यावरण में सुधार लाने और लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने का काम कर रहे हैं। जब भी पर्यावरणीय चिंता की बात होती है, तब हमारे ज़हन

में सबसे पहले सबसे बड़े गांधीवादी पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र का नाम आता है। अनुपम मिश्र सर्वस्पर्शी, सर्वसुलभ गांधीवादी चिंतक और मौलिक पर्यावरणविद् थे। अनुपम मिश्र अनोखी प्रतिभा वाले इंसान थे। उनके लिए कोई भी कार्य छोटा नहीं होता था। उन्होंने गांधी शांति प्रतिष्ठान से पर्यावरण पर बुलेटिन निकालने और नदियों पर पुस्तिकाएं निकालने, देश का पर्यावरण और हमारा पर्यावरण नामक रिपोर्ट तैयार करने, राजस्थान की रजत बूंदें और अनगिनत लेख-भाषण तैयार करने जैसे कार्य बहुत ही सहजता से किए। उन्होंने गांधी मार्ग का संपादन करने का ही नहीं, अपितु उसके लिफाफे बनाने, पते चिपकाने, टिकट लगाने जैसे छोटे कार्य को भी उसी गंभीरता, आनंद और लगन से करते थे।

अनुपम मिश्र ने हमें पर्यावरण की विरल समझ दी। उन्होंने राजस्थान की ज़मीन को पानी की आस दी और देखते- देखते राजस्थान की धरती से अँखुआते तालाब से लबालब तब्दील हो गयी। अनुपम मिश्र ने अपना पूरा जीवन लोगों में पर्यावरणीय चेतना जगाने और पर्यावरण की समस्या मुख्यत: जल समस्या के समाधान को समर्पित कर दिया। उन्होंने जल संरक्षण की लोक संस्कृति पर बल दिया। अनुपम मिश्र का मानना था कि सैकड़ों, हजारों तालाब अचानक शून्य से प्रकट नहीं हुए थे। इनके पीछे एक इकाई पीछे एक इकाई थी बनवाने वालों की, दहाई मिलकर, सैंकड़ा, हज़ार बनती थीं। पिछले दो सौ बरसों में नए किस्म की थोड़ी सी नयी किस्म की पढ़ाई पढ़ गए समाज ने इस इकाई, दहाई, सैंकड़ा, हज़ार को शून्य ही बना दिया। अनुपम मिश्र द्वारा लिखी गयी किताब 'आज भी खरे हैं तालाब' तालाब संस्कृति के लिए मील का पत्थर साबित हुई है। इस किताब की लगभग 23000 प्रतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। अनुपम मिश्र ने इस किताब को कॉपीराइट से मुक्त रखा। इस किताब में पुराने समय में हमारे देश में बेजोड़ भव्य सुंदर तालाबों की परंपरा को दर्शाया है। मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित जल राणा राजेंद्र सिंह का कहना हैं कि राजस्थान की उनकी संस्था तरुण भारत संघ के पानी बचाने के बड़े काम को सफल बनाने में इस पुस्तक का बहुत बड़ा हाथ है। जयपुर जिले के ही सालों से अकालग्रस्त लापोड़िया गाँव ने इस पुस्तक को आत्मा में बसाया। लापोड़िया गाँव ने पुस्तक से प्रेरणा पाकर न केवल अपनी जलगाहें बचाईं, बल्कि अपने प्रदेश की चारागाहें तथा गोचर भी बचाए। लापोड़िया के सामूहिक प्रयासों का नतीजा यह रहा कि आज 300 घरों का लापोड़िया, जयपुर डेयरी को चालीस लाख वार्षिक का दूध दे रहा है।

जल-जंगल संरक्षण के ऐसे ही आंदोलनों से लापोड़िया को लक्ष्मण सिंह जैसा नेतृत्व क्षमता वाला नायक मिला। उनकी इन्हीं क्षमताओं के कारण आज लापोड़िया के आसपास के 300 गाँव अपने पैरों पर खड़े हो रहे हैं। शहरों की ओर पलायन में निरंतर गिरावट आई है।

पुस्तक का प्रभाव उत्तरांचल में भी हुआ। यहाँ पौड़ी-गढ़वाल के उफरेखाल क्षेत्र के दूधातोली लोक विकास संस्थान के श्री सच्चिदानंद भारती ने पुस्तक से प्रेरणा पाकर पहाड़ी क्षेत्रों की विस्तृत चालों (पानी बचाने के लिए पहाड़ी तलाई) को पुनर्जीवित करने का काम शुरू किया। इस दौरान पिछले 13 सालों में उन्होंने 13 हज़ार चालों को बचाया-बनाया। उनके इन्हीं प्रयासों से उजड़े हिमालय के शीश पर फिर से हरियाली का मुकुट दिखने लगा है। ऐसी बहुगुणी प्रतिभा वाले महान पर्यावरण चिंतक आज हमारे बीच में नहीं है।

इस शोध में अनुपम मिश्र की पर्यावरण पत्रकारिता में प्रस्तुति, उनकी पर्यावरण पत्रकारिता के प्रभाव का अवलोकन एवं विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध पर्यावरण पत्रकारिता और अनुपम मिश्र को छः भागों में विभक्त किया गया है। पहले अध्याय शोध प्रारूप में शोध की प्रासंगिकता, शोध का उद्देश्य, शोध की प्राकल्पना आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी है। दूसरे अध्याय में भारत तथा विश्व के पर्यावरण के मुद्दों के बारे में बताया गया है। और, साथ ही साथ पर्यावरण पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति के बारे में बताया गया है। अध्याय तीन भारत के कुछ प्रमुख पर्यावरणविद् और अनुपम मिश्र के जीवन परिचय पर आधारित है। अध्याय चार में अनुपम मिश्र की पर्यावरणीय दृष्टि और अनुपम मिश्र की जल संरक्षण की तकनीकी के बारे में बताया गया है। अध्याय पाँच में अनुपम मिश्र द्वारा लिखी गयी किताबों और लेखों का विश्लेषण किया गया है तथा उनकी पुस्तक से प्रभावित होकर जिन लोगों ने जल संरक्षण की मुहिम शुरू की है उनके बारे में जानकारी दी गयी है। अध्याय छः में पर्यावरणविद्, अनुपम मिश्र के साथ काम कर चुके वरिष्ठ पत्रकार राकेश दीवान और अनुपम मिश्र की पत्नी मंजू मिश्र से साक्षात्कार किया गया है। अनुपम मिश्र ने पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण के लिए जो कार्य किए हैं उनका लघु स्तर पर समावेशन किया गया है। मेरा यह शोध कार्य उनको अर्पित श्रद्धांजली है।